बोल्ड, स्मार्ट, ब्यूटीफुल, पर्सनॅलिटी

अप टू डेट बनने के फॉर्मूले

अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक नार्लीकर से ब्रह्माण्ड के बारे में चर्चा करते हुए वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी गुरूदेव। साथ में संघस्थ साधु-साध्वी एवं उदयपुर के विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर आदि।

लेखक : वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दीजी गुरुदेव

Scanned by CamScanner

SCIENCE IS PART OF RELIGION BUT RELIGION IS ABSOLUTE SCIENCE

- A. Kanaknandi

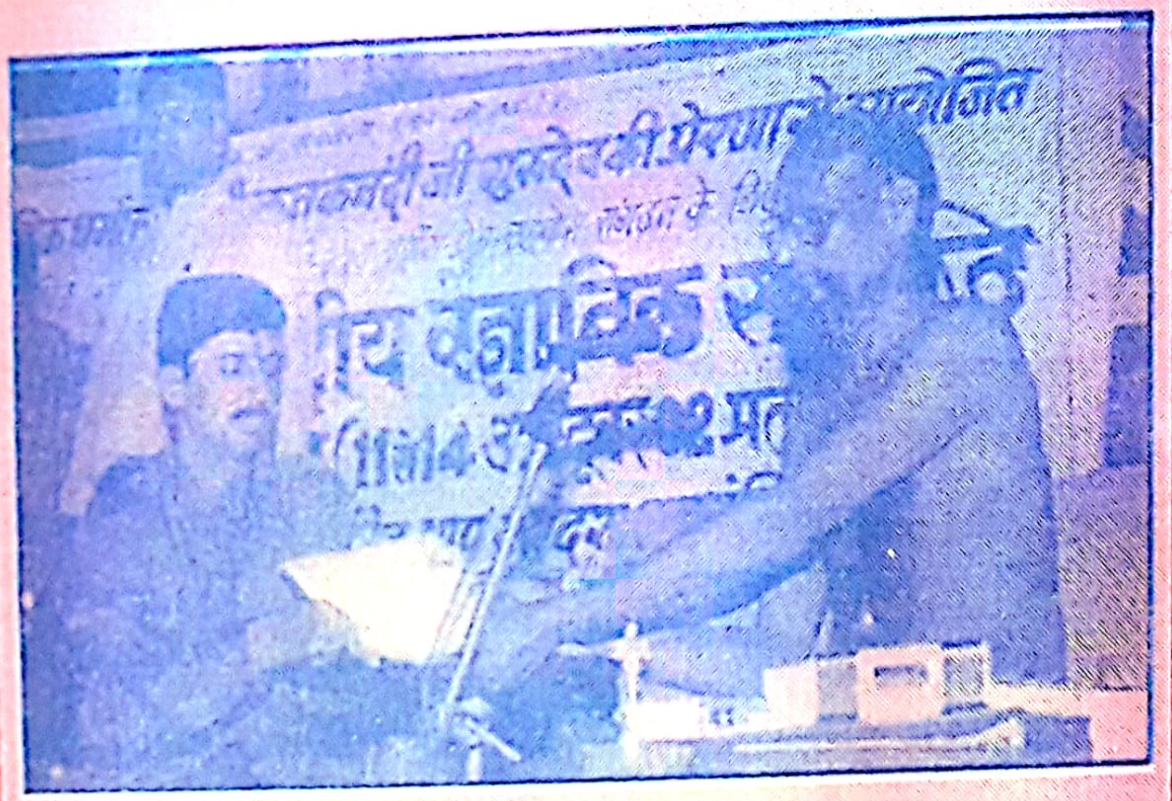

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी (प्रतापगढ़) में प्रथम स्थान प्राप्त स्वर्ण पदक विजेता श्री ए.पी. जैन (वैज्ञानिक अधिकारी राज. परमाणु बिजलीघर, भामानगर) को प्रमाण पत्र देते हुए वैज्ञानिकाचार्य कनकनंदी गुरुदेव। (श्री ए.पी. जैन आचार्यश्री के द्वारा स्थापित संस्था के कार्यकर्ता भी हैं।)

Scanned by CamScanner

बोल्ड, स्मार्ट, ब्यूटीफुल, पर्सनॅलिटी अप टू डेट बनने के फॉर्मूले

✦ लेखक ✦

वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दीजी गुरूदेव

Scanned by CamScanner

1. धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान एवं

2. धर्म दर्शन सेवा संस्थान

ग्रन्थांक : 143

लेखक : आचार्य कनकनन्दीजी गुरुदेव

पावन संदर्भ : बा.ब्र.प्रशान्त की क्षुल्लक दीक्षा एवं मुंगाणा चातुर्मास की पुण्य स्मृति में

सौजन्य : सकल दिगम्बर जैन समाज, मुंगाणा

संस्करण : प्रथम (2003)

प्रतियाँ : 2000

मूल्य : ज्ञान प्रचारार्थ 5/-

✦ प्रकाशक ✦

धर्म दर्शन विज्ञान शोध संस्थान
एवं धर्म दर्शन सेवा संस्थान

Scanned by CamScanner

चलो ! हम सब मॉर्डन बने!!

हम मुंगाणावासियों का परम अहोभाग्य है कि वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दी गुरूदेव ससंघ का चातुर्मास–2003 में सानन्द प्रभावना पूर्वक चल रहा है। 2002 में प्रतापगढ चातुर्मास के लिए जब आचार्य श्री विहार कर रहे थे तब मुंगाणा में चार पांच दिन का प्रवास रहा। उस समय आचार्य श्री ससंघ की सरलता, सहजता, वात्सल्य, बच्चो को संस्कार देने की प्रवृति तथा ज्ञान–विज्ञान से प्रभावित होकर जब हमारे ग्राम के प्रबुद्ध लोगों ने बच्चो को सस्कारित करने के लिए चातुमार्स के लिए अनुरोध किया तब आचार्य श्री ने इस भावना के सफलता के लिए आर्शीवाद दिया। प्रतापगढ के प्रभावना पूर्ण चातुर्मास के अनन्तर जब मन्दौसर (एम. पी.) वालो का बार बार आग्रह हुआ तब आर्चाय श्री वहाँ से मन्दसौर गये। आचार्य श्री ससंघ से मन्दसौर के दिगम्बर, श्वेताम्बर, जैन, हिन्दु, गायत्री परिवार, आर. एस. एस. (संघ परिवार) आदि इतने प्रभावित हुए कि 2003 के चातुर्मास मन्दसौर के लिए सबने संगठित

Scanned by CamScanner

होकर अनेक बार अनुरोध किये परन्तु आचार्य श्री मुंगाणा की इस भावना (बच्चो को, नई पीढि को संस्कारवान् बनाने के लिए आप हमारे मुंगाणा में चातुर्मास करे, हमे अन्य कुछ नहीं चाहिए) से प्रभावित होकर मुंगाणा में चातुर्मास करने के लिए मंदसौर से वापस मुंगाणा पधारे।

चातुर्मास के मंगल प्रवेश से लेकर रोज प्रवचन, धार्मिक कक्षा, आचार्य श्री के साहित्य लेखन, आरती, प्रश्नमंच, प्रतियोगिताएँ आदि चल रहे है। आगे शिविर, दीक्षा, मंडल विधान तथा "कौन बनेगा ज्ञानवान" प्रतियोगिता भी होने वाली हैं। इन सबसे औंर आचार्य श्री की चर्चा एवं भावना से हमें पता चला की आचार्य श्री स्वयं कितने बोल्ड, स्मार्ट, मॉर्डन तथा अप टू डेट है तथा हम और हमारे भारतीय लोग कितने पिछडे हैं। पाश्चात्य लोग तथा हिरो–हीरोइनो (जिने आचार्य श्री जिरो–जिरोइन कहते हैं) का अंधानुकरण तुच्छता से, हूल्लडपना से करते है। इससे हमारी बुद्धि, सम्पत्ति, स्वास्थ, समय का अनावश्यक दूरूपयोग होता हैं जिसके

Scanned by CamScanner

कारण हम लोग भारतीय प्राचिन महान् ज्ञान–विज्ञान, सभ्यता, संस्कृति तथा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, प्रगतिशिलता से वंचित है हम भारतीय तो स्व–महान् संस्कृति तथा आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से वंछित होकर अतो भ्रष्ट, ततो भ्रष्ट तथा सर्वत्र भ्रष्ट हो रहे हैं। यह सब ज्ञान हमें नहीं था। और हम लोग केवल आधुनिक फॅशन–व्यसन, आड़म्बरो को ही बोल्ड मानते थी परन्तु अभी हमें यथार्थ से आचार्य श्री के अगाध देश–विदेश के प्राचीन ज्ञान–विज्ञान एवं आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से तथा उनके जो बडे–बडे वैज्ञानिक, प्रॉफेसर, वकील आदि शिष्यों कि सरलता, सहजता से हमें यथार्थताका परिज्ञान धिरे–धिरे हो रहा है। हम सब आचार्य श्री की शिष्याएँ यह भावना भा रहीं हैं और आप लोगों से प्रार्थना कर रहीं है की आप लोग भी आधुनिकता आदि को समझे और अनावश्यक फेशन व व्यसन से जो हिंसा हो रहीं है, भावात्मक, सामाजिक, पारिवारीक, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय प्रदूषण हो रहा है उससे स्वयं को एवं दूसरों को बचाये।

Scanned by CamScanner

हम लोग पहले सोचते थी कि फॅशन–व्यसनों को अपनाने से ही प्रसिद्धि प्राप्त होती है और पहिचान बनति है और लोग हमें बोल्ड, स्मार्ट मानते हैं परन्तू जब हमें आचार्य श्री का सानिध्य प्राप्त हूआ तब हमनें अनूभव किया कि आचार्य श्री दिगम्बर जैन आचार्य होने के कारण समस्त फेशन–व्यसन, आडम्बर, प्रसिद्धि यहाँ तक कि समस्त प्रकार के वस्त्रों से रहित होने पर भी देश–विदेश के दिगम्बर–श्वेतांबर जैन, हिन्दू, मुस्लिम, ईसाइ, वैज्ञानिक, प्रॉफेसर, इंजीनियर, लेखक, जज, उद्योगपती, नेता ईन्हे इतनी गरिमा देते हैं, उनके लिए तन–मन–धन, समय खर्च करते है तब हमें पता चला कि हम तो पहाड के निचे ऊँट के बराबर है। केवल हम ही नहीं अधिकांश भारतीय इस इक्ति को चरितार्थ करते है। हमें आचार्य श्री के व्यक्तित्वने इतना प्रभावित किया है कि हमें केवल दूसरों के वाह्य फेशन–व्यसन से प्रभावित न होकर दूसरें महापूरूषों के सदा जीवन उच्च विचार से प्रेरणा लेकर हमें महान् कार्य करना चाहिए। जिस प्रकार मदर टेरेसा, नाईट्अँगल, मैडम क्यूरी,

Scanned by CamScanner

कल्पना चावला, कीरण बेदी, मेनका गांधि आदि ने महान् कार्यों कों करके महान् बने, हमें भी उसी प्रकार उनके उच्च आदर्शों का अनुकरण करना चाहिए, न कि सुष्मिता सेन, ऐश्वर्या राय, बिपाशा वसू, लारा दत्ता, उर्मिला मार्तोंडकर आदि अश्लिल, कामूक, शील–सदाचार, नैतिकता, राष्ट्रियता के प्रदूषणकारी भ्रष्ट लडकियाँ, महिलाओं का अन्धानूकरण करना चाहिए।

अधिकांश बडी कक्षा की एवं कॉलेज की लडकियाँ स्कूल–कॉलेज से अच्छी शिक्षा तो कम प्राप्त करती है, परन्तु कु शिक्षा, फेशन, व्यसन, उत्श्रूंखलता आदि का प्रशिक्षन, प्रचार–प्रसार जादा करती है। ऐसी लडकियों का अन्धानूकरण दूसरी भोली–भाली, अनपढ, ग्रामीण लडकियाँ भी करके स्वयं को स्मार्ट, मॉर्डन मान लेती है परन्तू ग्रामीण संस्कृति कि जो महान्ता, मधुरता, शितलता है उसकि गरिमा को नहीं पहिचान पाती है। यह भी अनुभव में आया कि अधिक उच्च शिक्षिता वह भी विज्ञान व गणित की लडकियाँ व महिलायें सिम्पल रहती है।

Scanned by CamScanner

परन्तु जो थोड़ी बहुत पढती है वह जादा फॅशन, व्यसन, आडम्बर करती है क्योंकि उसे प्राचीन संस्कृति के प्रति न प्रेम रहता है और न ही आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का ठोस परिज्ञान रहता है।

आचार्य श्री ने जो अभितक देश–विदेश के समस्त दर्शन एवं ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन किया एवं भारत के 13 प्रदेशों का परिभ्रमण किया उसके माध्यम से जो उन्हें जो कटु अनुभव हुआ उसका दिग्दर्शन " बोल्ड, स्मार्ट, ब्यूटिफुल, पर्सनॅलिटी, अप टु डेट बनने के फार्मुले" में किया हैं। इसमें आचार्य श्री कि अपनी पीडा, भावना, कार्य योजना, कार्य प्रणाली कि भी अभिव्यक्ति हुई है। हम सब भारतीयों का परम पावन कर्तव्य है कि उनकी पीडा को समझे, उनकी भावना का आदर करे एवं अनेक कार्यो में सहयोग करे।

हम सब आचार्य श्री की शिष्यांए आचार्य श्री के व्यक्तित्व, ज्ञान–विज्ञान से जो कुछ प्राप्त कर रही है, उनके साहित्य लेखन में सेवा कर रहीं हैं, आहरदान

Scanned by CamScanner

कर रहीं है उसी प्रकार अन्य सब हमारी प्रिय बहीनें, सहेलियाँ ! लाभ उठाकर स्वयं को गौरवान्वित करें ऐसी भावना के साथ–

अर्चना, प्रेमलता, सोनल, संध्या, रागिनी (मुंगाणा)

कम्पोजर :– संघस्थ ब्र. प्रशान्त जी जैन
राजेश रजावत (मुंगाणा)
अरविन्द डागरिया (मुंगाणा)

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी (प्रतापगढ़) में प्रथम स्थान प्राप्त एवं स्वर्ण पदक विजेता प्रो. एम.एम.बजाज (जैन) (दिल्ली विश्वविद्यालय) को प्रमाण पत्र देते हुए आ.श्री. कनकनंदी गुरुदेव।(एम.एम. बजाज) आचार्य कनकनंदी द्वारा स्थापित संस्था के कार्यकर्ता भी हैं।

Scanned by CamScanner

बोल्ड, स्मार्ट, ब्यूटीफुल, पर्सनॅलिटी अपटुडेट, बनने के फार्मुले

वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दी

प्रत्येक द्रव्य की नैचर चैइंजवेल होने के कारण मनुष्य को भी मॉर्डन टाइम में मॉर्डन होना स्वाभाविक है। जो युगानुकूल प्रगति नहीं करेगा वह "आउट ऑफ डेट" हो जाएगा। परन्तु की मॉर्डन यथार्थता से अधिकांश निरक्षर से लेकर साक्षर तथा ग्राम से लेकर महानगर के लोग अनभिज्ञ हैं। मैंने जो देश–विदेश के उच्चस्तरीय व्यक्तियों से लेकर निम्नस्तरीय लाखों यक्तियों का सर्वे किया, रिसर्च किया, स्टडी किया उसके आधार पर उपयुक्त रिजल्ट पर पहुँचा हूँ। मोस्टली लोगों की थिंकिंग है कि सैक्सी ड्रेस पहनना, लिपिस्टिक, नेलपॉलिश युज करना,रंग–बिरंगी गॉगल्स लगाना, नेरोकट जीन्स या मिनी स्कर्ट या मिडी प्रयोग में लाना, जिससे गुप्तअंगो का सैक्सी लुक हो, टांग तोड हिन्दी इंगलिश मिली हुई खिचडी भाषा बोलना, बॉय फ्रेंड्स या गर्ल

Scanned by CamScanner

फ्रेंड्स के साथ कुत्तों के जैसे अश्लील बिहेवियर करते हुए आवारा घुमना, सिनेमा, T.V. खेल के चारित्रहीन भ्रष्ट, अश्लील, मारकाट, धोखाधडी करने वाले, राष्ट्र–समाज द्रोही, हीरो–हीरोइन (जीरो–जीरोइन) के प्रोग्रम देखना, उनकी नकल करना, स्वकर्तव्य नही करना, गुरूजन गुणिजनों की आज्ञापालन नही करना, उनकी सेवा नहीं करना धार्मिक–सांस्कृतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक आदशा का पालन नहीं करना आदि को बोल्ड़नेस आदि मानते हैं। कुछ तथा कथित धार्मिक मार्डन जेंटल मैन होते है जो कि धार्मिक–वैज्ञानिक, नैतिक–पारिवारिक–सामाजिक, सत्य–तथ्यपूर्ण सिद्वांतों को जाने बिना ही उसे तकियानूसी, ब्लाइंड विलिफ, रूढिगत परम्परा मानकर रिप्युज करते हैं, मखौला उडाते हैं शालीनता, नम्रता मर्यादा को त्यागकर आध्यात्मिक वादी बनकर मनमानी उद्दण्ड, उत्श्रृंखल, सुपरियर कम्पलेक्स का बिहेवियर करते हैं। उपर्युक्त दोनों प्रकार के मॉर्डन व्यक्ति स्व–पर–परिवार, समाज, राष्ट्र विश्व के लिए घातक होते हैं। क्योंकि यह संक्रामक परजीबी अतितीव्रता से स्प्रैड होकर नीति,

Scanned by CamScanner

सदाचार, संस्कृति शान्ति को पेसेन्ट, डेड कर देते हैं। रियल बोल्ड एण्ड डुप्लिकेट बोल्ड के बारें में कुछ दिग्दर्शन यहा कर रहा हूँ जिससे व्यक्ति ओरिजनल बोल्ड आदि बने ।

(1) सादा जीवन उच्च विचार

(Simple living and high thinking)

देश–विदेश के जितने भी धर्म से लेकर राजनीति, विज्ञान आदि के टॉप व्यक्ति हैं वे सब हाई थिंकिंग, हाई एइम, टॉप वर्क करने वाले हैं। वे अपने हाई क्वालिटी के एइम, नॉलेज से रियलाइज करके समस्त बाह्य फिजुल अनावश्यक फेशन–व्यसन, आडम्बर, स्टेट्स सिम्बलो एण्ड विहेवियरो को त्याग कर देते है जिससे, समय, शक्ति, धन, ज्ञान, उपलब्धियों का वॅडयूज, वेस्टेज होता हैं तथा गौरवमय व्यक्तित्व चारित्र, ज्ञान, सुख–शान्ति का हास होता हैं। जैन तीर्थंकर जो विश्वसुन्दर के साथ–साथ पृथ्वी के श्रेष्ठतम सत्ता–सम्पत्ति के मालिक होते है वे भी

Scanned by CamScanner

मोस्ट सुपेरीयर बनने के लिए समस्त सत्ता–सम्पत्ति, वैभव, अलंकार, प्रसाधन सामग्रियों के साथ–साथ समस्त ड्रेस तक त्याग करके सुप्रीम सांइटिस्ट एण्ड एक्सट्रा ह्युमन बनते हैं। इसी प्रकार महात्मा बुद्ध, इसा मसीह, सुकरात, आइन्स्टीन हेनेरी फोर्ड, मदर टेरेसा, विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, विनोबाभावे, महर्षि अरविन्द, जैन–साधु भी सादा जीवन उच्च विचार वाले हैं। मनोवैज्ञानिक/आध्यात्मिक फेक्ट है कि जो उद्देश्य भावना ज्ञान व्यवहार में खोटे–छोटे लाइट होते हैं वे अपनी वीक पॉइंट को कवर करने के लिए अनावश्यक आडम्बर पूर्ण ढोंग क्रियेट करते हैं। "रिक्त चना बाजे घना", अध भरी घघरी छलकत जाये भरी घघरी चुपकत जाये" आदि सुक्तियों की उत्पत्ति भी इससे ही हुई हैं। कहा भी है

घटं भित्वा पटं छित्वा कृत्वा गर्दभ रोहणं ।
येन केन प्रकारेण पुरूषो प्रसिद्ध भवेत् (1)
उष्ट्रस्य विवाहेन च गीतं गायन्ति गर्दभाः ।
परस्पर प्रसंशन्ति अहोरूप अहो ध्वनी (2)

अर्थात् व्यक्ति स्व प्रसिद्धि पहिचान, आईडेण्टिफाई के

Scanned by CamScanner

लिए तथा स्वयं को दूसरों से सुपरीयर सिद्ध करने के लिए अयोग्य अनैतिक, अभद्र, बेड मॅनर, फैशन–व्यसन आदि का सेवन करता है। अन्य उस स्तरीय या निम्नस्तरीय व्यक्ति भले इस प्रकार के व्यवहार को अच्छा माने परन्तु उच्च स्तरीय व्यक्ति इन सब व्यवहारों को रिजेक्ट/रिफ्युज/नेग्लेट करते हैं और इसे पिछडापन, हुल्लडपन, तुच्छता मानते है। मोस्ट इण्डियन्स केवल विदेशिओं के "यूज एण्ड थ्रो" वस्तु, रीति–रीवाज, ड्रेस, भाषा, फॅशन एण्ड व्यसन को यूज करके स्वयं को "वोल्ड ॲण्ड गोल्ड" मानते हुए शेमलेस् इडियटफुल विहेवियर करते है।

(2) हट/करंट साइंस एण्ड बिहेवियर

मननशील, प्रज्ञाधनी, विकासशील, व्यवहार कुशलता से युक्त मनुष्य मॉर्डन/अप टू डेट होता है न कि वर्तमान में रहने वाला या मॉर्डन युग के वाह्य संसाधन, ड्रेस, फैशन–व्यसन को युज करने वाला। यदि ऐसा

Scanned by CamScanner

होता तो वर्तमान युग में रहने वाले पशु–पक्षी, कीट–पतंग या बर्बर असभ्य, कुत्सित व्यक्ति भी मॉर्डन हो जायेगें। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, विश्वमैत्री, विश्वप्रेम, ब्रॉडमाइंड, शाकाहार, पर्यावरण, सुरक्षा, योगा, हर्बल प्रसाधन प्रयोग, अहिंसा, सापेक्ष सिद्धांत, उदार उदात्त विचार–व्यवहार, सज्जनता, शालीनता, कर्तव्यनिष्ठा, डिसिप्लीन, पंच्यूल्टी, क्लिननेस् से लैस व्यक्ति ही यर्थात से मॉर्डन है। फॉर एक्जामपल न्यूटन, आइन्स्टीन, विवेकानन्द, डॉ. कलाम (राष्ट्रपति), एडिसन, अब्राहिम लिंकन, मेडम क्यूरी, मेनका गाँधी, अरविन्द, स्वामी रामतीर्थ, दार्शनिक कृष्णामूर्ति आदि ।

मैं ऐसे अनेक मॉर्डनो को जानता हूँ जिन्हें किसी भी भाषा का शुद्ध ज्ञान नहीं है, किस समय क्या खाना, क्या पीना, क्या बोलना, क्या करना, कैसे बैठना,कैसे उठना,कैसे चलना आदि का प्राथमिक जनरल नॉलेज भी नहीं हैं। कुछ तो गोबर गणेश होते है, तो कुछ नशीली वस्तु यथा शराब, तम्बाखू, गुटखा, माँस, अण्डा, मछली, नेलपॉलिस, लिपिस्टिक,जैसे अवैज्ञानिक,

Scanned by CamScanner

अस्वास्थ्यकर, घृणित, हिंसक, पर्यावरण प्रदूषक वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। कुछ को तो आधुनिक वैज्ञानिक थ्योरी की वात तो वहुत दूर रहे वट अल्सो वैज्ञानिकों के नाम,देश–विदेश क धटनायें, रिसर्च रेव्युलेशन, डिस्कवरी, क्रान्तिकारी पुरूषों की कार्य एण्ड अल्सो उनके नाम तक नहीं जानते हैं। ऐसे व्यक्ति तो "हंस मध्ये वको यथा", "गौमुख व्याघ्र "जैसे शोभा को प्राप्त होते हैं। लाइक दिस मॉर्डन आध्यात्मिक वादि में भी भाव की पवित्रता सरल–सहजता, कोमलता, व्यवहार की मधुरता नहीं हैं, अनुभावात्मक, गहन–गम्भीर, सर्वोतमुखी, सार्वभौम ज्ञान नहीं हैं। ऐसे व्यक्ति तो अतो भ्रष्ट, ततो भ्रष्ट, सर्वत्र भ्रष्ट हैं।

(3) सुसंस्कृत

जो अंतरंग, वहिरंग, स्वच्छता/पवित्रता से संस्कारवान् है वे कल्चर्ड हैं। ओनली शरीर, ड्रेस, घर की सफाई से कल्चर्ड क्योंकि अंतरंग शुद्धता के विना

Scanned by CamScanner

वह स्वयं न सुख–शान्ति–प्रसन्नता का फिलिंग कर सकता है न औंरों को इसका शेयर कर सकता है। कुछ व्यक्ति तो ड्रेस टिप–टाप पहनेंगे परन्तु शरीर, हाथ, नाखुन या घर आदि गंदा रखेंगे। कुछ अपने घर को क्लिन करके उस गन्दगी को सार्वजनिक रास्तों आदि में फेंक देंगे। स्वयं के लिए दूसरों से गुड मेनर चाहेंगे परन्तु दूसरों से वेड विहेवियर करेंगे। कुछ स्व–धर्म–स्व संस्कृति को महान् सिद्ध करने के लिए दूसरों से निन्दनीय व्यवहार करेंगे परन्तु स्वयं सुसंस्कृत नहीं बनेंगे। जैसा कि हिटलर आतंकवादी, संकीर्ण धार्मिक कट्टरवादी आदि। यह सब व्यवहार तो बर्बर जंगली, असभ्य कबिलाई लुटेरों का है नकि मॉर्डन थिंकीग वालो का है। वर्तमान के तथा कथित सुट, बुट, टाई, नेलपालिस, लिपिस्टिक, हाइहिल चप्पल, गॉगल्स प्रयोग करने वाले साक्षरी राक्षसों के समान लुट–पाट, धोखाधडी, स्वमलिंग, बलात्कार, आतंकवाद में लिप्त रहते हैं, वे स्वयं को बोल्ड स्मार्ट मानते है और दूसरे भी उन्हें ऐसा ही मानते हैं। जो भोले–भाले, सहज–सरल, परोपकारी, सादा

Scanned by CamScanner

जीवन उच्च विचार रखत हैं उन्हें 'आउट ऑफ डेट' गवार अनाड़ी मानकर उनसे दुर्व्यवहार करते हैं

(4) स्वावलम्बन एवं कर्तव्यनिष्ठ

शारीरिक, मानसिक, बोल्डनेस, स्मार्टनेस के लिए आस–पास के सामान्य नॉलेज के साथ–साथ स्वकर्तव्य उत्तरदायित्वों का समयनुसार परिपालन करना चाहिए। इससे अनुभव, स्किननेश सेल्फ्–कॉन्फिडेंस, एक्टिवनेस, मेंटल एण्ड फिजिकल फिटनेश आदि इन्क्रिज होते हैं। परावलम्बन, टाइम वेस्टेज, मोटापा, लेजिनेस, आदि का शिकार नहीं होना पडता हैं। बॉडी एण्ड फेस में चार्मिंग आती है, शरीर छरहरा रहता है। प्रायः प्रत्येक ग्रेट मेन स्वावलम्बी एवं कर्तव्यनिष्ठ होते है। स्व–दैनिक कार्यो के साथ साथ दुसरों की सेवा–सहायता, आदि भी करते है। परन्तु अधिकांश साक्षरी, शहरी, धनी, मॉर्डन व्यक्ति दुसरों की सेवा–सहायता के वदले परोपजीवी, परावलम्बी, आलसी, निकम्मे होते हैं। शाररीक श्रम को गंवारों–गरीबो

Scanned by CamScanner

का काम मानेगें परन्तु हजारों रूपये खर्च करके जीम, विभिन्न प्रकार के क्लब में जाकर एक्सरसाइज करेगें, अनुत्पादक खेल खेलेगें। विदेश में बडे बडे पोस्ट में सर्विस कारने वाले या धनी लोग भी गृह कार्य के लिए सरवेन्ट नहीं रखते हैं। परन्तु स्व–होम वर्क स्वयं करते हैं। क्योंकी एक तो विदेश में वे स्वयं कर्तव्यनिष्ठ होते हैं, सेकेण्डिली नौकरो को भी हाई पेमेन्ट देना पडता है। भरत में तो सामान्य व निम्न मध्यम वर्ग के लोग भी दुसरों के मजबुरी का फायदा उठाकर बाल मजदुर आदि रखेगें और उसके परीवार के भरण पोषण योग्य पेमेन्ट भी नही देंगें। इससे वे आलसी परोपजीवी, परावलम्बी, अस्वस्थ्य बनते है।इधर वे स्वयं को बाबु, आधुनिक, साहुकार, धार्मिक, पुण्यवान सिद्ध करेगें। कॉलेज में जो स्टुडेन्ट, लेकचर्र टाइम टेबलनुसार स्टडी करते है और लेक्चर देते हैं वे तो गंवार है और जो नही करते है वे तो अपटुडेट है। ऐसा ही सार्वजनिक कार्यक्रम में जो समय पर जाकर कार्य करते हैं वे तो फालतु हैं और जो नहीं जायेंगे या लेट जायेंगे वे वी. आई. पी. है। जैन

Scanned by CamScanner

तीर्थंकर जो गृहस्थावस्था में स्वयं राजा, महाराजा, चक्रवर्ती, विश्वसुन्दर होते हैं वे भी मुनि अवस्था में स्वालम्बन आदि के लिए पैदल चलते हैं स्वयं ही स्वयं के लिए शरीर के केश उखाडते है, हाथ से खडे–खडे भोजन करते हैं। अभी भी जैन साधु यह सब करते हैं।

भोग विलासमय लक्जिरियस् मॉर्डन जीवन प्रणाली से भारत के महानगरों 18% छात्र, 16% छात्राएं आसमान्य मोटापा एवं वजन की है, अमेरिका में ऐसे किशोरों की संख्या 15% से कम और ब्रिटेन में मात्र 7.3% ही है। एक राष्ट्रीय सर्वे के अनुसार हर तीसरे कीशोर को दृष्टिदोष हैं। 30% दन्तरोगी, 1/3 किशोरियों के जननांग में संक्रमण की आशंका है, 20% अवसाद से ग्रसित है, 40% विद्यार्थी चिन्ता संबन्धी रोग से ग्रस्त है, 25% शहरी किशोर धुमपान करते है, उनमे से 68.8% परस्पर में मारपीट करते हैं, 6.39% किशोर संयोगसुख भोगने वाले हैं। सैक्स रोगी 24%, 40% एड्स रोगी है, मधुमेह, रक्तचाप, कैंसर से भी अनेक पीडित हैं।

Scanned by CamScanner

(5) आन्तरीक नाइसनेस

शरीरिक रोग से जिस प्रकार कितना भी सुन्दर शरीर बुझा हुआ/निस्तेज लगता है उसी प्रकार अन्तरीक सुन्दरता के बिना बाह्य शारिरीक फेशन की सून्दरता भी शव की सून्दरता के समान लगती है। स्व–दोष दूर करके सुगुणों से अंतरंग को अलंकृत करने से शरीर एवं मुख मण्डल से आभा/ सुन्दरता /शालीनता /मधुरता/शीतलता का विकीरण होता है। इससे आकर्षण, प्रभाव, गौरव क्रियेट होता है। इससे व्यक्ति स्मॉर्ट, बोल्ड, मॉर्डन आदि बनता हैं इसके कारण ही तीर्थंकर, बुद्ध, संत, समाज सुधारक, समाज सेवक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गॉधी, डॉ. हेडगेवार, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, श्री राम शर्मा आचार्य, मदर टेरेसा, विवेकानन्द आदि से इतने व्यक्ति प्रभावित, प्रकाशित अभिभूत हैं। इनकी सुन्दरता के समक्ष विश्व सुन्दरी की सुन्दरता प्रभाहीन हैं, निरर्थक हैं। जैसा की ममतामयी माता के समक्ष वेश्या की सुन्दरता। ऐसी

Scanned by CamScanner

आन्तरिक प्रसाधन सामग्री है दया, दान, सेवा, परोपकार, नम्रता, मधुरता, सरल–सहजता, शालीनता आदि आदि। वह बाह्य ब्युटीफूल के लिए जो उपर्युक्त सौन्दर्य साधन की मर्डर/इन्जूरी करके नेलपॉलिस शॅम्पु चर्म निर्मित आइटम प्रयोग कर मॉर्डन, मॉडल, स्मॉर्ट बनते हैं, जैसा की सुर्पणखा, वेश्या, कुलटा, नट, बहुरूपीया।

बर्टन्स ॲण्ड डोरोथी प्रर्किन्स की ओर कराये गये एक सर्वेषण में नियर्ली 80 प्रति. पुरूषों ने कहा की वे ऐसी महिला मित्र के साथ डेट पर जाना पसन्द नहीं करेगें जिसके अधोवस्त्राका कोई हिस्सा दिखाई दे रहा है। वह एक और चौंकाने वाली बात यह है कि अधिकांश महिलायें अपने पुरूष मित्रों के दिखते अधोवस्त्रो को पसन्द करती हैं। नियर्लि 3/4 महिलाओं ने कहा वे अपने पुरूष साथियों की लटकती पतलुन के उपर बॉक्सर शाट्स की झलक देखना पसन्द करती हैं, पुरूषो को अधिकतम आकर्षण के लिए सूट पहने चाहिए। इस सर्वे से और अनुभव से भी किलयर पिक्चर दिखाइ देता है कि सैक्सी लुक/फैशन/कामुकता का प्रदर्शन लडकियाँ, महिलाऐं

Scanned by CamScanner

अधिक करती है। पहले तो पुरूषों के लडकों के नाभी से उपर भाग खूले रहते थे। वट मॉर्डन पुरूषों के, लडको के तो प्रायः पूर्ण शरीर ढके रहते हैं। परन्तु लडकियों के महिलाओं के गुप्त अंगों का सैक्सी ढंग से उभार होता हैं। सिनेमा, टी. वी, विज्ञापन, पोस्टर, आदि में अश्लील क्रार्यक्रम में पुरूषों से अधिक महिलाओं की भागीदारी बढ–चढकर है। इतना ही नहीं मादक वस्तुआके प्रयोग, विज्ञापन, स्मगलिंग से लेकर आतंकवाद तथा आतंकवादीयों से लव करना, शादी करना उन्हें सहयोग देने में भी ऐसी ही मॉर्डन लडकियाँ एवं महिलायें करती हैं परन्तु खेदपूर्ण आश्र्चय यह है कि ऐसे भ्रष्ट, अश्लील, कामूक, असभ्य, नीति–नियम, सदाचार विहीन, राष्ट्रीय, संस्कृति, सभ्यता, शालिनता, को नष्ट–भ्रष्ट करने वाले हीरो, हीरोइन को भारत के लोग अपना आर्दश, ग्रेट इण्डियन, अनुकरणीय मानकर उनका गुणगान करते हैं, उनकी नकल करते हुए स्वयं की तुच्छता/खोखलेपन को प्रकट करते हैं। तथा कथित भारत के हीरो, हिरोइन उनके अन्धभक्त, निर्देशक, निर्माता यहाँ तक की सेंसर

Scanned by CamScanner

बोर्ड और भारत सरकार तक में यदि इतनि योग्यता, क्षमता, बुद्धिमता, कला, सम्पति, वैज्ञानिकता, आधुनिकता है तो वे डिस्कवरी (Discovery), नेशनल जॉग्रफि (National geo.) एनिमल प्लॅनेट (Animal Planet) के जैसे प्रोगाम रिले करके दुनिया में अपनी फेमस बढाये। अथवा वे यदि वस्त्र ही छोटा करना चाहते है या त्याग करना चाहते हैं तो जिस प्रकार सच्चे वैराग्य सम्पन्न आध्यात्मिक साधु–संत धन– सम्पति, भोग–विलास, मोह –माया त्याग करके ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके कम वस्त्र धारण से लेकर पूर्ण वस्त्र तक त्याग करके नग्न रहतें हैं; वैसा भी करके अपनी पवित्रता, सहज–सरलता, अंतरंग, सुन्दरता को इन्क्रिज करते हुए सेल्फ–कांन्फिडेंस, बोल्डनेस आदि को उजागर करें न कि ऐसे जंगली असभ्य या पागलों के समान बहुमूल्य वस्त्रों से गुप्त अंगों का सैक्सी प्रदर्शन करते हुए अमर्यादित, असामाजिक, अनैतिक, अ – आध्यात्मिक, घृणित, तुच्छ, निर्लज्य प्रदर्शन करें, जो व्यवहार सामान्य पशु–पक्षी भी नहीं करते हैं। जो ऐसा व्यवहार करते हैं उनका सर्व प्रकार से घोर विरोध करना प्रत्येक

Scanned by CamScanner

नैतिकवान आर्दश व्यक्तियों का प्राकृतिक कर्तव्य/अधिकार हैं। हे भारत देश को महान कहने वालों! तथा पाश्चात्य संस्कृति की निन्दा करने वालों! क्या आप रियल भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति को जानते हो, मानते हो और उनकी अच्छाइयों को फॉलो करते हो। हे! काले चमड़े वाले गुलाम अंग्रेजी! तुम पहले हर संस्कृति की ओल्ड एवं मॉर्डन अच्छाइयों को फॉलो करो, समस्त बुराइयों का त्याग करो तब जाकर तुम "सत्यंशिवंसुन्दरम्" बनोगे। अभी साइंटिफिक अप टू डेट युग में ऐसी सुन्दरता को ब्युटिफूल माना जाता है न कि असभ्य जंगली के जैसे व्यवहारों को। वह जमाना लद गया है"आउट ऑफ डेट" हो गया है–विज्ञान के नये प्रकाश में। अभी सावधान हो जाओ अपने अज्ञानमय अंधकार के व्यवहारों से जब तक रियल नाइसनेस् जन्टिलमेन तुम्हें बुश मैन(अफ्रिका की जंगली जाति) करार नही देते हैं। उसके पहले सभ्य–सुसंस्कृत आधुनिक बनो इसमें तुम्हारी भलाई हैं।

Scanned by CamScanner

(6) कॉन्फिडेंट, पॉजिटिव थिंकिंग एण्ड अप टू डेट

किसी भी प्रकार के इम्पोर्टेंट कार्य करने के लिए सेल्फ कॉन्फिडेंट, सकारात्मक विचार के साथ–साथ प्रगतिशीलता भी अनिवार्य फेक्टर/रिजन है। आत्मविश्वास से भाव में दृढ़ता, आति है सकारात्मक विचारों का विकास होता है। इससे व्यक्ति प्रगति करता है। अदरवाइज जिस व्यक्ति में स्वयं के प्रति ही विश्वास नहीं है वह दूसरों के प्रति कैसे ओर कहाँ से विश्वास कर सकता है। विश्वास के विना सकारात्मक थिंकिंग कैसे क्रिएट कर सकता है। इसके बिना वह सही कार्य कैसे कर सकता है और इसके विना वह कैसे प्रगति कर सकता हैं। जितने महान् कार्य होते हे या महापुरूष होते हैं उनमें भी यह गुण अवश्य होते हैं भले वे सब धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, साहित्यक, सेवा, सुरक्षा, सम्बृद्धि, वैज्ञानिक, शोध–वोध–खोज आदि के क्षेत्रों के क्यो न हो। धर्म के क्षेत्र में तीर्थंकर, बुद्ध, ईसा मसीह, आदि है,

Scanned by CamScanner

तो सामाजिक क्षेत्र में राजा राम मोहनराय, महात्मा फुले आदि है, तो राजनैतिक क्षेत्र में शिवाजी, राणा प्रताप, लाल–बाल– पाल, गाँधी, नेताजी सुभाष, अब्राहिम लिंकन आदि है तो साहित्यक क्षेत्र में वेद व्यास, वाल्मीकी, आचार्य धरसेण, आचार्य भूतबली, आचार्य पुष्पदन्त, आचार्य उमास्वामी, आचार्य वीरसेन स्वामी, कबिर दास, सेक्सपियर, टालस्टॉय, आचार्य श्री राम शर्मा आदि है, तो सेवा क्षेत्र में नाइटेंगल, मदर टेरेसा, बाबा आप्टे आदि है, तो वैज्ञानिक क्षेत्र में पाइथागोरस, न्यूटन, एडिसन, क्यूरी दम्पति, आइन्स्टी आदि सेल्फ कॉन्फिडेंट एवं प्रगतिशीलता के उदाहरण हैं। ऑल मोस्ट इंण्डियन मॉर्डन लोगों में उपर्युक्त गुणों की विकृतियाँ पाइ जाती है। एजलाइक ओव्हर कॉन्फिडेंट या विकृत कॉन्फिडेंट आदि के कारण गुरूजन–गुणिजनों का अनादर करते हैं, अनुशानविहीन कार्य करते हैं, फेशन–व्यसनों में प्रोग्रेस करते हैं, हीरो–हीरोइन के अन्धभक्त होते हैं, अकल के बिना विदेशियों की अयोग्य नकल करते हैं। यदि रियल में सेल्फ कॉन्फिडेंस आदि होते तो भारतीय दीर्घकाल तक

Scanned by CamScanner

असभ्य बर्बर, विधर्मी, लुटेरों का गुलाम नहीं रहते और आजाद होने के 55 वर्षो तक भी विकसित देशों की क्लास में खडे होने के अयोग्य नहीं होते। अति प्राचीन काल से भारत ज्ञान–विज्ञान, आध्यात्म–संस्कृति–टेक्नॉलोजी–उद्योग आदि में समृद्ध होने पर भी, तथा प्राचीन ग्रन्थों में इन सब का वर्णन हाने पर भी विदेश में वैज्ञानिक दृष्टि से जो निडल से लेकर कॅम्प्यूटर तक तो राजैतिक, दृष्टि से डेमोक्रेशी से लेकर समाजवाद, साम्यवाद तो सेवा क्षेत्र में रेडक्रोस रोटरी क्लब, लॉयन्स क्लब, से लेकर N.C.C. स्काउट, तो चिकित्सा क्षेत्र में, वेसलिन से लेकर बाइपास सर्जरी, क्लोनिक का शोध–बोध प्रचार– प्रसार हो पाया, परन्तु भारत में नहीं। यद्यपि क्षेत्रफल, जनसंख्या, बुद्धि–लब्धि, I.Q., प्राकृतिक ऋतु, संसाधन सामग्री भारत में प्रायः अन्य देश से अधिक अवेलेबल है। इन सब वार्निंग एक्जाम्पलों से सिद्ध होता है कि ऑलमोस्ट इण्डियनों में इन्फ सेल्फ कॉन्फिडेंस आदि कि कमी है। इन सब कारणों से ही तो भारतीय लोग स्व–महान् संस्कृति, भाषा, ड्रेस, भोजन, डांस,

Scanned by CamScanner

म्युजिक, आर्ट, ध्यान, आयुर्वेद, प्रसाधन, सानग्री आदि को अपना ने में संकोच करते हैं, शर्माते है, हीनभाव से ग्रसीत होते हैं। जहाँ की भी हो जिसकी भी हो अच्छाइयों को ग्रहण करना श्रेष्ठ है, परन्तु विदेश की ऋतु, संस्कृति, परम्परा, रीति–रिवाज, आनुवांशिकता भारत से भिन्न होने कारण जो कुछ उनके लिए फिट है वह सब कुछ भारतीयों के लिए फिट ही हो इसकी कोइ ग्यारंटी नहीं है। यह सब वर्णन करने मैने भारतीयों को हीन ग्रंथी में ग्रसीत करने का या अपमानित करने का प्रयास नहीं किया हैं परन्तु हीन ग्रंथी से मुक्त करके स्वाभीमान जगाना चाहता हूँ। महान संस्कृति के वंशधरों! हीनभावना, अन्धानुकरण, परावलम्बन, निष्क्रियता, जडता, रूढ़िवादिता को तोडके फेंक कर सत्याग्राही, कर्मठ, साहसी, धीर, वीर, गंभीर, बनकर "सत्यं शिवं सुन्दरम्" "सच्चिदानन्दम्" बनो यही इस लेख का इन्टर मिनिंग और मेंरा ग्रेट एइम है। (मैने इस लेख को तथा कथित मॉर्डन व्यक्तियों की भाषा हिंगलिस (इंग्लिश + हिन्दी) में लिखा है।)

Scanned by CamScanner

परफेक्ट रियल मॉर्डन बनने की संक्षिप्त थ्योरी

(1) मॉर्डन एइज के ज्ञान–विज्ञान, भाषा, गति–विधियाँ महापुरूष इन्ष्टुमेंट का रियल नॉलेज हो।

(2) शालीनता, नम्रता, पंच्युलिटी एण्ड डीसीप्लीन, गुड पॉजिटिव थिंकिंग, गुड बिहेवियर आदि मॉर्डन होने के लिए अनिवार्य फॅक्टर हैं।

(3) केवल पाश्चात्य व्यक्तियों का हीरो–हीरोइनो का अकल बिना नकल करने पर कोइ मॉर्डन नहीं बनता है परन्तु इससे स्वयं के क्षुद्रता, पिछड़ापन, अन्धानुकरण आदि का अधिक प्रकटीकरण होता है।

(4) मॉर्डन बनने के लिए अपनी महान् संस्कृति, भाषा, ज्ञान–विज्ञान, खान–पान, परम्परा का त्याग करना अनुचित है, तथा विदेशी अयोग्य वेश–भूषा, खान–पान, रहन–सहन स्वीकार करना भी अयोग्य है।

Scanned by CamScanner

(5) केवल कौआ को सफेद रंग पोतने पर वह हंस नहीं बन जाता है; गधें शेर की खाल पहनने पर कोइ शेर नही बन जाते है, इसी प्रकार केवल दूसरों के बाह्य आचार–विचार खान–पान, रहन–सहन का अन्धानुकरण करने से कोइ महान नहीं बन जाता हैं।

शिक्षा, राजनीति, कानून, व्यसनमुक्ति आदि के बारे में श्रीमान् नरेन्द्र नाहटा (वित्तमंत्री, म.प्र. शासन) के साथ चर्चा करते हुए आचार्य कनकनन्दी गुरुदेव। उन्होंने अनुकूल परिवर्तन के लिए सहयोग करने का आश्वासन दिया।

Scanned by CamScanner

—: प्राप्ति स्थान :—

(1) प्रो. सुशीलचंद्र जी जैन, 'धर्म–दर्शन विज्ञान शोध संस्थान' निकट दि. जैन धर्मशाला, बडौत फोन – (01234) 262845

(2) श्रीमती रत्नमाला जैन W/O डॉ. राजमल जी जैन (वैज्ञानिक) 4–5 आदर्श कॉलोनी, पूलाँ, उदयपुर (राज.) फोन–2440793

(3) श्री गुणपाल जी जैन (इंजीनियर) बेहडा भवन, 87/1 कुन्दन पूरा, मुजफ्फर नगर, फोन– (0131) 2450229

(4) श्रीमती लक्ष्मी गुरूचरण जी जैन (वकील–मुंबई हाईकोर्ट) 144 मुवी टॉवर नियर, मिल्लत नगर लोखंडवाला कॉम्पलेक्स, अंधेरी (पश्चिम) मुंबई–53 फोन–(022) 26327152, 26312124

(5) सेवाश्री सूरेखा जैन (शिक्षीका) W/O वीरेन्द्रकुमार डालचंदजी गडिया, कपडे के व्यापारी,–सलुम्बर जि. उदयपुर–313001 फोन–(02906) 231143

(6) श्री महावीर कुमार जैन, 13 अग्रसेन कॉलोनि दादाबाडी, कोटा फोन–(0744) 2410818, 2363992

(7) धर्म दर्शन सेवा संस्थान C/o चंद्रप्रभु दि. जैन मंदिर, आयड़ छोटूलाल चित्तौडा, आयड बस स्टॉप के पास, उदयपूर (राज)–313001 फोन–(0294) 2413565

(8) श्री दि. जैन नया मंदिर, C/o श्री धरमचंद जी एवं मनसुख सेठ (जैन) निचला बजार, प्रतापगढ जि. चित्तौडगढ (राज)–312605 फोन–(01478) 220304, 222229, 222529

Scanned by CamScanner

GREAT PERSONALITITES ARE NOT MADE BY HISTORY BUT HISTORY IS MADE BY THEM.

- A. Kanaknandi

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी (प्रतापगढ़) में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त स्वर्ण पदक विजेता वैज्ञानिक राजमल (इसरो में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी, अंतरिक्ष अनुसंधान से सम्बद्ध, अनेक अन्तर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के समन्वयक) को प्रमाण पत्र देते हुए वैज्ञानिकाचार्य कनकनंदी गुरुदेव (राजमल आचार्यश्री द्वारा स्थापित संस्था के निर्देशक भी हैं)

Scanned by CamScanner

EVERY GREAT FEAT HAS A SMALL BEGINNING

- A. Kanaknandi

चतुर्थ राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी (टाउन हॉल, उदयपुर) में w.w.w. jainkanaknandhi.org एवं E-mail के उद्घाटन के अवसर पर आचार्य कनकनंदी गुरुदेव ससंघ, गुणपाल जैन, श्रीमती मधु जैन (आचार्यश्री द्वारा स्थापित संस्थान के अध्यक्ष तथा कम्प्यूटर के द्रव्यदाता) एवं उदयपुर के मेयर आदि।

सिद्धा प्रिन्टर्स, भरिंगवद फोन : 220003

Scanned by CamScanner